प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

किसी भी रणनीति का महत्व यह चुनने में है कि क्या नहीं करना है...
- माइकल पोर्टर

अमेरिकी शिक्षाविद

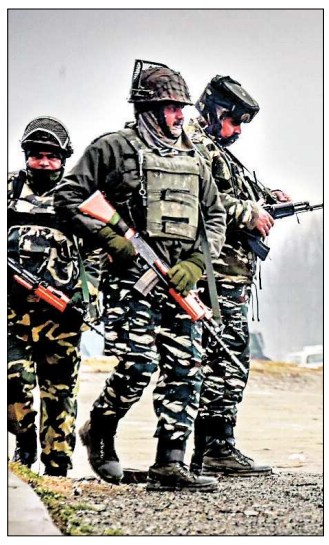

पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई का विकल्प खुला हुआ है, लेकिन उसकी आर्थिक और कूटनीतिक घेरेबंदी भी उतनी ही आवश्यक है, ताकि वह दुनिया में पूरी तरह से अलग-थलग पड़ जाए।

पाकिस्तान की घेरेबंदी

पुलवामा हमले की पृष्ठभूमि में सरकार द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में विपक्षी दलों ने जहां मिल-जुलकर आतंकवाद का सफाया करने का संकल्प लिया, वहीं सरकार ने सामाजिक समरसता बनाए रखने का उन्हें भरोसा दिलाया। सबसे वरीयता प्राप्त देश का दर्जा वापस लेने के बाद पाकिस्तान से आयातित सामान पर सीमा शुल्क 200 फीसदी बढ़ाने का फैसला कर हमारी सरकार ने उसे एक और झटका दिया है। चिकित्सा के लिए मेडिकल वीजा पर भारत आने वाले पाकिस्तानी नागरिकों के लिए भी उसने शर्तें सख्त कर दी हैं। वैश्विक स्तर पर पुलवामा हमले के लिए पाकिस्तान की जिस तरह लानत-मलामत हो रही है, वह भी उस पर दबाव बढ़ाने के लिए काफी है।

अमेरिकी रक्षा सलाहकार जॉन बोल्टन ने न केवल आत्मरक्षा के लिए भारत द्वारा की जाने वाली जवाबी कार्रवाई का समर्थन किया है, बल्कि जैश सरगना मसूद अजहर को अंतरराष्ट्रीय आतंकी घोषित करने में आ रही अड़चनें दूर करने का भरोसा भी उन्होंने दिलाया है। अमेरिका ने इस हमले की जांच में कूटनीतिक और खुफिया सहयोग करने का वायदा भी किया है। सुरक्षा परिषद के पांचों स्थायी सदस्य देशों के अलावा यूरोप, अफ्रीका और अरब क्षेत्र के अनेक देशों को पाकिस्तान की असलियत के बारे में बताया गया है, तो ईरान ने भारत का समर्थन करते हुए हाल ही में अपने यहां सुरक्षा बलों पर हुए आत्मघाती हमले के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराते हुए चेतावनी दी है। अफगानिस्तान ने भी तालिबान प्रतिनिधियों के साथ इमरान खान की प्रस्तावित मुलाकात पर आपत्ति जताते हुए संयुक्त राष्ट्र में शिकायत की है। पुलवामा हमले में पाक लिप्तता के बारे में एक डोजियर फाइनेंशियल ऐक्शन टास्क फोर्स (एफएटीएफ) को देने की भी तैयारी है, जिसने पिछले साल पाकिस्तान को काली सूची में डाल दिया था। दस्तावेज सौंपने पर हमले की जांच की झूठी बात कहने वाला पाकिस्तान अब पुलवामा हमले में जैश की भूमिका को अफवाह बताते हुए कुलभूषण जाधव मामले में, जिसकी मौत की सजा पर आज से अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में सुनवाई शुरू होने वाली है, पर्याप्त सुबूत होने की जिस तरह बात कर रहा है, उससे स्पष्ट है कि वह बदलने वाला नहीं। पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई का विकल्प तो खुला हुआ है ही, पर आर्थिक और कूटनीतिक मोर्चे पर उसकी सतत घेरेबंदी भी उतनी ही जरूरी है।

दो पत्तियों के बीच कमल

पलानीस्वामी की मजबूत होती छवि और जनहितैषी योजनाएं तमिलनाडु में भाजपा-अन्नाद्रमुक गठबंधन की मददगार हो सकती हैं। पर द्रमुक और कांग्रेस के कारण चुनावी लड़ाई उतनी आसान भी नहीं होने वाली।

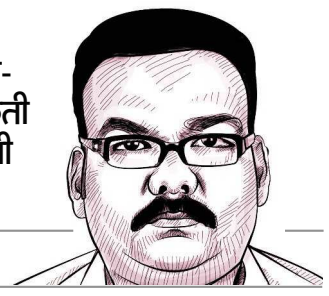

एम भास्कर साई, वरिष्ठ पत्रकार

लोकसभा चुनाव से पहले तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक के साथ सीटों के तालमेल पर हुई सहमति केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा के लिए स्वाभाविक ही एक बड़ा घटनाक्रम है। तमिलनाडु की 39 और पड़ोस के केंद्र शासित प्रदेश पुड्डुचेरी की एक लोकसभा सीट यानी कुल 40 लोकसभा सीटों में से अन्नाद्रमुक और भाजपा के बीच क्रमशः 25 और 15 सीटों पर सहमति बनी है। लेकिन इसमें एक झोल है। अन्नाद्रमुक और भाजपा को अपने अन्य सहयोगियों- डीएमडीके, पीएमके और पुथिया तमिझगम को इसमें समायोजित करना होगा।

हालांकि थोड़ा पीछे लौटकर देखें, तो पता चलता है कि भाजपा और अन्नाद्रमुक के बीच गठजोड़ कोई नई बात नहीं है। दरअसल वह अन्नाद्रमुक ही थी, जिसने 1998 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के साथ साझेदारी कर तमिलनाडु के मतदाताओं को उससे परिचित कराया था। भाजपा तब तक राज्य में एक अनजान पार्टी थी। उस गठजोड़ की जीत हुई और अन्नाद्रमुक अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में केंद्र की सरकार का हिस्सा बनी। हालांकि अन्नाद्रमुक ने जब सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया और केंद्र की सरकार सत्ता पाने के तेरह महीनों बाद गिर गई, तब भाजपा ने 1999 के चुनाव में द्रमुक के साथ गठजोड़ किया था, जो कि अन्नाद्रमुक की धुर विरोधी पार्टी है। उस गठबंधन की भी जीत हुई और भाजपा ने द्रमुक और अन्य सहयोगियों के साथ पांच वर्ष तक सत्ता में साझेदारी की। वर्ष 2004 के चुनाव में भाजपा ने फिर से अन्नाद्रमुक को अपना सहयोगी बनाया। इस बार गठबंधन का प्रदर्शन खराब रहा और वह तमिलनाडु और पुड्डुचेरी की सभी चालीस सीटें खो बैठा।

वर्ष 2009 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने न तो अन्नाद्रमुक के साथ गठजोड़ किया और न ही द्रमुक के साथ। जबकि 2014 के लोकसभा चुनाव में तो, जिसमें नरेंद्र मोदी को भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश किया गया था, अन्नाद्रमुक और भाजपा के बीच कड़वी जुबानी जंग तक देखी गई। भाजपा ने विजयकांत के डीएमडीके, वाइको के एमडीएमके और रामदौस के पीएमके के साथ सतरंगी गठजोड़ किया था, जबकि अन्नाद्रमुक ने अकेले चुनाव लड़ने का साहसिक फैसला लिया था।

अन्नाद्रमुक की सुप्रीमो जयललिता ने, जो तमिलनाडु की मुख्यमंत्री भी थीं, मतदाताओं से यह पूछकर कि वे किसे चाहते हैं, मोदी को या इस महिला को, भाजपा को खुलेआम चुनौती दी थी। मोदी के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों के बावजूद जयललिता ने ऐसा किया था। तमिलनाडु के लोगों ने उसी महिला को पसंद किया, क्योंकि अन्नाद्रमुक ने 37 सीटें जीतकर ऐतिहासिक विजय हासिल की और देश की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई।

लेकिन जयललिता की अनुपस्थिति में भाजपा और अन्नाद्रमुक का खट्टा-मीठा रिश्ता गहरी दोस्ती में बदल गया। केंद्र में भाजपा की अगुवाई वाली सरकार पर अक्सर तमिलनाडु की अन्नाद्रमुक सरकार के समर्थन का आरोप लगया जाता है, जहां पलानीस्वामी मुख्यमंत्री और पन्नीरसेल्वम उप मुख्यमंत्री हैं। अब जब लोकसभा चुनाव में कुछ ही महीने शेष रह गए हैं, अन्नाद्रमुक ने आखिरकार भाजपा के साथ गठजोड़ कर ही लिया। हालांकि भाजपा और अन्नाद्रमुक के बीच चुनावी गठबंधन की संभावना राज्य में उनकी विरोधी पार्टियों (एम के स्टालिन की द्रमुक और टीटीवी दिनाकरन की एएमएमके) ने बहुत पहले ही जता दी थी। लेकिन भाजपा और अन्नाद्रमुक ने पिछले हफ्ते तक इस बारे में चुप्पी बनाए रखी। इसका खुलासा तब हुआ, जब भाजपा के तमिलनाडु चुनाव प्रभारी और केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल चेन्नई पहुंचे और एक प्रमुख उद्योगपति के घर अन्नाद्रमुक के वरिष्ठ नेताओं से तीन घंटे लंबी बातचीत के बाद दिल्ली लौट आए। सूत्रों की मानें, तो उन्होंने पलानीस्वामी और पन्नीरसेलवम के साथ भी गुप्त बैठक की। पत्रकारों से उन्होंने कहा, सभी संभावनाएं विचाराधीन हैं, सही समय आने पर हम आपको खुशखबरी देंगे।

जयललिता से अपनी पूर्व भेंट को याद करते हुए उन्होंने कहा, 'एक समय कुछ लोग सोचते थे कि दिवंगत अम्मा और मेरे बीच कुछ गलतफहमियां हैं, लेकिन ऐसा कुछ नहीं था। जब मैं उनसे मिला, तो उन्होंने छोटे भाई की तरह प्यार से मेरा स्वागत किया। अक्सर मीडिया में तरह-तरह की बातें होती हैं, लेकिन वे नहीं जानते कि प्रधानमंत्री मोदी और अम्मा के बीच बहुत सौहार्दपूर्ण रिश्ता था। मुझे यकीन है, आगे हम सब मिलकर तमिलनाडु के लोगों की सेवा करेंगे।' उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री मोदी अगली बार केंद्रीय मंत्रिमंडल में तमिलनाडु से और सदस्यों को शामिल करने के बारे में उत्सुक हैं। अभी पोन राधाकृष्णन तमिलनाडु से केंद्रीय मंत्रिमंडल में अकेले मंत्री हैं। अन्नाद्रमुक में अगर कोई भाजपा के साथ गठबंधन का विरोधी है, तो वह हैं वरिष्ठ नेता और लोकसभा के उप-सभापति एम थंबीदुरई। लेकिन अन्नाद्रमुक और भाजपा की राज्य इकाई के कुछ नेता थंबीदुरई के बयान को उनकी व्यक्तिगत टिप्पणी बता रहे हैं। दरअसल अन्नाद्रमुक नेतृत्व ने उन्हें गठबंधन के खिलाफ टिप्पणी न करने की चेतावनी दी थी, जिसके बाद उन्होंने चुप्पी साध ली।

जहां तक चुनावी संभावना का सवाल है, तो चुनावी लड़ाई कठिन होने वाली है, क्योंकि द्रमुक कांग्रेस के साथ मिलकर अन्नाद्रमुक-भाजपा गठबंधन पर निशाना साधने के लिए तैयार है। जयललिता और विद्रोही नेता टीटीवी दिनाकरन (जो पार्टी के बड़े वोट शेयर का दावा करते हैं) के अभाव में पलानीस्वामी और पन्नीरसेल्वम के नेतृत्व में पार्टी को चुनाव का सामना करना है। जबकि स्टालिन, वाइको और सीमन जैसे नेताओं की आलोचनाओं का सामना कर रही भाजपा के पास राज्य में कोई करिश्माई नेता नहीं है। दूसरी तरफ पलानीस्वामी, जो पहले भोले और सत्ता की राजनीति में नए दिखाई देते थे, अब मजबूत नेता बनकर उभरे हैं और उन्होंने कई जनहितैषी योजनाओं की घोषणा की है। उन्हें लगता है कि वह वोट हासिल कर लेंगे। अति आशावादी भाजपा का मानना है कि इस बार तमिलनाडु में उसका आंकड़ा बढ़ेगा। इसी कारण चुनाव से पहले यहां पार्टी के बड़े-बड़े नेताओं की रैली करवाई जा रही है। लेकिन इस गठबंधन के भाग्य का फैसला तो अंततः लोकतंत्र के असली मालिक यानी मतदाता ही करेंगे।

अंतर्ध्वनि

>> अर्चना वर्मा

संबंधों के पनपने की स्वाभाविक जमीन परिवार है

स्वाधीनता का चुनाव अंततः अकेलेपन का चुनाव है और लंबे अकेलेपन की परिणति इस एहसास में होती है कि सृजनात्मक सक्रियता जैसे एकाध अपवादों को छोड़कर कॅरिअर की सफलता जीवन में सार्थकता का स्रोत नहीं हो सकती। मातृत्व स्त्री को प्राकृतिक रूप से उपलब्ध सार्थकता का एक सहज अवसर है, पर स्वाधीन स्त्री के लिए वह न केवल कॅरिअर में बाधक, अनावश्यक सिरदर्द, बल्कि पराधीनता की कुंजी है। सार्थकता मानवीय संबंधों की उष्मा में ही है और संबंधों के पनपने की स्वाभाविक जमीन परिवार है।

अजीब विडंबना है! संबंधों में स्वाधीनता का एहसास बाधित होता है, तो एकांत में सार्थकता का एहसास नष्ट हो जाता है। स्वाधीनता का कुल एहसास ले-देकर बिना रोक-टोक के उठ-बैठ सकना, बिना किसी आज्ञा-अनुमति की मजबूरी के आ-जा पाना, खर्चा-वर्चा कर लेना ही है, जो मिल जाए, तो बस इतना ही सा लगता है और न मिले, तो दबाव, घुटन और मजबूरी को जिंदा होने के एहसास का पर्याय बना देता है। यानी मजबूरियों और दबावों की सापेक्षता में तो स्वाधीनता अपने आप में सार्थक एक मूल्य है, पर उसके अभाव में जीवन को किसी दूसरे बड़े प्रयोजन की जरूरत पड़ती है।

लेकिन बड़े से बड़ा प्रयोजन भी संबंधों का, परिवार का शत-प्रतिशत विकल्प नहीं बन सकता। तो क्या वही समझदार थी, जिसे शुरू में मूर्ख और सामान्य समझा गया? रुदन और हाहाकार में अपना विरेचन करती, संबंधों की सुरक्षा का कवच पहने, अस्मिता और झंझटों में न पड़ती वह सचमुच कोई अनाम तोष स्वयं को दे पा रही है? स्वाधीन के अतिरिक्त भी कोई सार्थक हो सकता है क्या? कौन जाने। कहना मुश्किल है। औरत जितना बदल चुकी है, उतना शेष समाज नहीं। अब अपने रहने लायक जगह उसे कहां मिले?

-मशहूर नारीवादी लेखिका, आलोचक, कवयित्री, जिनका निधन हो गया।

मंजिलें और भी हैं

>> मल्हार कलंबे

समुद्र तटों को साफ करने का मिशन

लंबे समुद्र तट मुंबई की पहचान हैं, लेकिन शहर के ज्यादातर तट कचरे से पटे पड़े रहते हैं। मैंने डेढ़ साल पहले दादर समुद्र तट की सफाई शुरू की थी और इसमें कामयाब रहा। दादर तट पर मुख्य रूप से मीठी नदी का कचरा माहिम-प्रभादेवी तट से आता है। करीब 18 किलोमीटर लंबी मीठी मुंबई के बीचोंबीच बहने वाली नदी है। बोरीवली से निकलती मीठी नदी माहिम में समुद्र से मिलती है। इसमें मुंबई के लोग सबसे ज्यादा कचरा डालते हैं और हर बरसात में यहां बाढ़ का यह प्रमुख कारण है। यह कचरा दादर तट पर आता है।

मैं दादर में पला-बढ़ा और बचपन से इन्हीं समुद्री तटों पर खेला हूं। ये तट मेरे घर से बमुश्किल सिर्फ डेढ़ किलोमीटर दूर है। दो साल पहले, जब मैं 19 बरस का था, तब मुझे लगता था कि बचपन में जो तट साफ-सुथरा था, वह अब इतना गंदा क्यों है? समझ में आया कि लोग गंदा कर रहे हैं। मैंने मां से बात की, तो उन्होंने कहा कि तुम्हें लगता है कि तट साफ-सुथरा होना चाहिए, तो खुद यह काम करो। तब मैंने स्कूल के दोस्तों को फोन किया और तट साफ करने की बात की। वे साथ आए और हमने काम शुरू किया। दोस्तों के साथ मैंने 65-70 हफ्तों तक काम करके दादर समुद्र तट को कचरा मुक्त बनाने के बाद मीठी नदी को कचरा मुक्त करने का अभियान शुरू किया।

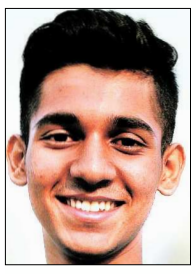

लोगों को जागरूक करने के लिए हम बच्चों के संग हाउसिंग सोसाइटियों को भी अपने साथ जोड़ रहे हैं।

बीते 12-13 हफ्तों से हम लोग शनिवार को दादर तट साफ करते हैं और रविवार को मीठी नदी से कचरा निकालते हैं। डेढ़ साल में हमने किसी वीकेंड पर छुट्टी नहीं ली है। हमें देखकर धीरे-धीरे स्थानीय लोग, कॉरपोरेट, नेता और सेलेब्रिटी भी आने लगे। फिर हमने इस काम में स्कूलों-कॉलेजों को आमंत्रित किया। अब यह हमारे लिए मिशन जैसा बन गया है और हम दादर और मीठी नदी की सफाई के साथ-साथ अन्य समुद्र तटों की सफाई की भी योजना बना रहे हैं। हालांकि मेरा शुरुआती उद्देश्य कतई नहीं था कि यह काम मिशन बन जाए, लेकिन लोग खुद-ब-खुद इससे जुड़ते चले गए।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि समुद्र और नदी में मिलने वाला 90 फीसदी कचरा प्लास्टिक का होता है। इसके अलावा कपड़े, जूते, स्कूल बैग, डायपर, कंडोम, सेनेटरी नेपकिन से लेकर चिकित्सा से जुड़ी अन्य चीजें भी इनमें होती हैं। यह धारणा गलत है कि जो लोग समुद्र किनारे जाते हैं, वही कचरा फैलाते हैं। वे लोग भी गंदगी करते हैं, लेकिन इसमें उनकी भागीदारी बहुत कम होती है। मुंबई के तटों पर ज्यादातर कचरा नदी-नालों-नालियों के माध्यम से घरों से निकल कर आ रहा है। लोग प्लास्टिक की थैलियां बना-बनाकर नदी-नालों में फेंकते हैं। मुंबई में कचरे के निस्तारण की समस्या है और इससे निपटना बड़ी चुनौती है। अगर लोग सूखे और गीले कचरे को अलग-अलग निकालना शुरू करें, तो समुद्र में कचरा आने की समस्या 60-70 फीसदी तक कम हो सकती है।

लोगों को जागरूक करने के लिए अब हम स्कूल-कॉलेज के बच्चों के संग हाउसिंग सोसाइटियों को भी अपने साथ जोड़ रहे हैं। उनकी जागरूकता ही कचरे को समुद्र में जाने और समुद्र को प्रदूषित होने से रोक सकती है। मेरा मानना है कि यदि हम ऐसे ही लगातार काम करते रहे, तो एक दिन अवश्य मुंबई अपने साफ-सुथरे समुद्री तटों पर नाज करेगी और हमारे शहर की रौनक भी यूरोप या अमेरिका के तटीय शहरों से कम नहीं होगी।

प्रियंका का जादू चलेगा?

प्रियंका का जादू मीडिया पर चल गया है। उनके करिश्मे की उसी तरह चर्चा हो रही है, जिस तरह कभी उनकी दादी के करिश्मे की होती थी। लेकिन प्रियंका का करिश्मा मतदाताओं पर जादू करेगा या नहीं, यह कह पाना फिलहाल मुश्किल है।

तवलीन सिंह

प्रियंका गांधी का करिश्मा मतदाताओं पर जादू करेगा या नहीं, यह कहना मुश्किल है, लेकिन अभी से स्पष्ट है कि प्रियंका का जादू मीडिया पर चल गया है। कांग्रेस पार्टी में महासचिव का पद संभालने के बाद पिछले सप्ताह जब वह पहली बार लखनऊ पहुंचीं, तो मीडिया ने उस घटना को इतना महत्वपूर्ण माना कि वह दिन भर टीवी के हर समाचार चैनल पर छाई रहीं। जाने-माने टीवी पत्रकारों ने इस घटना को प्रशंसा भरे शब्दों में पेश किया। मैंने जब अपने एक लेख में यह याद दिलाया कि वंशवाद लोकतंत्र के लिए अक्सर हानिकारक साबित होता है, तो एक वरिष्ठ मीडिया पंडित मेरे पीछे ही पड़ गए कि क्या परिवारवाद भारतीय जनता पार्टी में नहीं है? उन्होंने भाजपा के उन राजनेताओं के नाम गिनाए, जिनके बच्चे भी राजनीति में हैं। वह चुप तभी हुए, जब मैंने उन्हें ध्यान दिलाया कि मैंने वंशवाद का विरोध किया है, किसी एक दल में व्याप्त इस प्रथा का नहीं।

राजनीति पर मैंने तब लिखना शुरू किया था, जब इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं। आपातकाल की आड़ में उन्होंने अपने बेटे संजय गांधी को अपना वारिस बनाया था। उस समय से मैं वंशवाद का विरोध करती आई हूं।

लेकिन मेरे अधिकतर पत्रकार साथियों को वंशवाद से कम, प्रेस सेंसरशिप से ज्यादा तकलीफ थी। लेकिन आपातकाल का जुल्म झेलने वाले वही पत्रकार जब इंदिरा जी के सामने आते थे, तो यों बिछ जाते थे, जैसे किसी फिल्मी सितारे के सामने उनके चाहने वाले बिछ जाते हैं। वे इंदिरा जी के 'करिश्मे' की बातें बिल्कुल वैसे ही किया करते थे, जैसे आज के पत्रकार प्रियंका के करिश्मे की कर रहे हैं। जैसे आज कहा जा रहा है कि प्रियंका जब कमरे में प्रवेश करती हैं, तो लोग चुप हो जाते हैं। कभी लोग उनकी दादी के बारे में भी वैसे ही कहा करते थे।

इस राज परिवार का दर्जा इतना ऊंचा है कि सोनिया गांधी के दौर में बहुत कम पंडितों ने यह कहने की हिम्मत दिखाई कि देश के असली प्रधानमंत्री पर हुकुम चलाकर उन्होंने इस पद की गरिमा को चोट पहुंचाई।

इस परिवार के 'करिश्मे' में इतनी शक्ति है कि राजीव गांधी के दौर में सिखों का जो नरसंहार हुआ था, उसका दोष कभी उन पर नहीं लगा। वहीं नरेंद्र मोदी का नाम अब भी 2002 के दंगों से जोड़ा जाता है। ऐसा क्यों? कुछ इसलिए कि वास्तव में हम पत्रकार इस राज परिवार का इतना सम्मान करते हैं कि हमारी बोलती बंद हो जाती है। कुछ इसलिए भी कि नेहरू-गांधी परिवार की पुरानी परंपरा रही है पत्रकारों को खुश रखने की।

सोनिया गांधी ने एक बार भी प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं की, लेकिन वह पत्रकारों को अक्सर अपने घर पर चाय पर बुलाया करती थीं।

उनके बेटे राहुल गांधी ने वर्ष 2014 के बाद पत्रकारों से मिलने की आदत डाल ली है। रही बात बहन प्रियंका की, तो बिना उन पत्रकारों के नाम लिए मैं आपको बता दूं कि वर्षों से प्रियंका गांधी की आदत रही है कुछ वरिष्ठ पत्रकारों के साथ रोज बातचीत करने की।

राजनीति में सक्रिय होने से पहले भी मीडिया में उनकी खूब चर्चा रही है, और जब भी हुई है, तो उनकी प्रशंसा ही हुई है। उनके पतिदेव की जब आलोचना की गई है, तो यह बात पहले स्पष्ट कर दी गई है कि जो भी उन्होंने कारोबार में किया है, उसमें प्रियंका का कोई हाथ नहीं है।

अब देखना यह है कि मीडिया के इस व्यापक समर्थन से प्रियंका गांधी कांग्रेस पार्टी की तकदीर बदल सकेंगी या नहीं।

खुली खिड़की

लॉ ऐंड ऑर्डर इंडेक्स

एक सूचकांक के मुताबिक, सिंगापुर की कानून व्यवस्था पूरी दुनिया में सबसे अच्छी है। यह इंडेक्स एक मिश्रित स्कोर है, जो स्थानीय पुलिस में विश्वास, व्यक्तिगत सुरक्षा की भावना और आपराधिक घटनाओं पर आधारित है। दक्षिण अमेरिकी देश बोलीविया इस सूचकांक में फिसड्डी है।

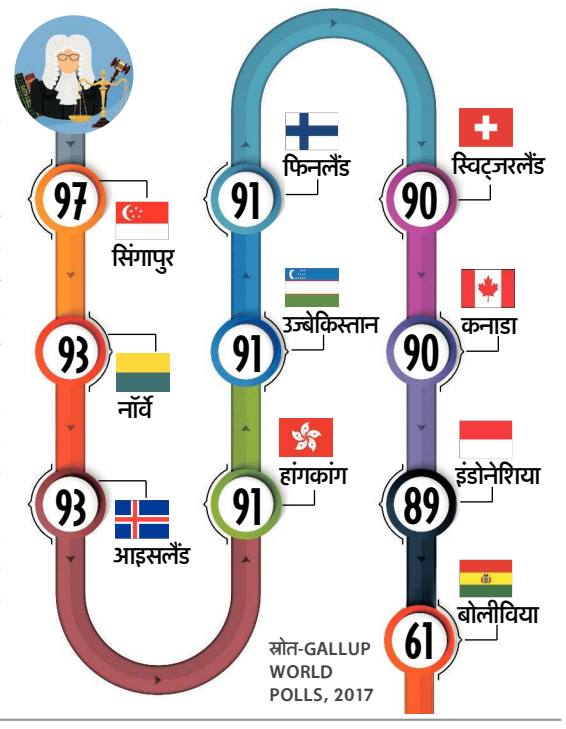

स्रोत-GALLUP WORLD POLLS, 2017

जाकी रही भावना जैसी

सत्संग

एक संत सत्संग कर रहे थे। अचानक एक राहगीर चलते-चलते ठहर गया। उसने संत को प्रणाम कर थोड़ी देर सत्संग किया, फिर जाने से पहले संत से कहा, महाराज, मैं फिर आपका सत्संग सुनने आऊंगा। लेकिन जाते-जाते मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूं कि आप जिस गांव से आए हैं, वहां के लोग कैसे हैं?

संत ने पलटकर उससे पूछा, पहले आप बताएं कि आपके गांव के लोग किस तरह के हैं?

राहगीर ने कहा, वे तो बहुत अच्छे हैं। संत ने जवाब दिया, मेरे गांव के लोग भी बहुत अच्छे हैं। तभी तो मैं इतना ज्ञान अर्जित कर पाया। संत के जवाब से संतुष्ट हो राहगीर वहां से चला गया।

शाम को एक और राहगीर ने संत से वही सवाल पूछा कि महाराज, आपके गांव के लोग कैसे हैं?

संत ने पूछा, आपके गांव के लोग कैसे हैं? राहगीर ने कहा, मत पूछें, वे तो बहुत बुरे हैं। संत ने कहा, मेरे गांव के लोग भी बहुत बुरे हैं। इसी कारण तो मैं यहां आकर सत्संग कर रहा हूं। राहगीर यह सुन चला गया।

वहां उपस्थित भक्तों में से एक ने संत से पूछा, महाराज, आपने दो लोगों को दो तरह के जवाब क्यों दिए? संत ने उसे समझाते हुए कहा, देखो, अपना दृष्टिकोण ही अन्यत्र दिखता है। सज्जन को दूसरे लोग भी सज्जन दिखते हैं, जबकि दुर्जन के लिए पूरी दुनिया ही दुष्टों से भरी है। भक्त की समस्या का समाधान हो गया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

राहुल, दादा जी और जीत

राहुल की कहानी, जिसका आत्मविश्वास दादा जी के कारण लौटा और उसने टीम को जिताया।

राहुल अपने दादा जी के साथ नदी किनारे टहल रहा था। इतने में दादा जी के फोन पर एक कॉल आ गई। राहुल ने वहीं सड़क पर पड़े कुछ छोटे-छोटे पत्थर उठाए और नदी की सतह पर उन्हें उछालने की कोशिश करने लगा। उसे पता था कि पत्थर स्पिन करेगा, तभी वह कई छलांगें लेकर नदी के उस पार निकल पाएगा। नहीं तो वह पहली बार में ही पानी में डूब जाएगा। राहुल के दादा जी एक नामी क्रिकेटर थे। उनका नाम अच्छे स्पिनरों में लिया जाता था। पूरी शाम राहुल नदी के किनारे पत्थरों को स्पिन करने की कोशिश में लगा रहा। लेकिन उससे यह नहीं हो पा रहा था। कुछ देर में दादा जी वापस लौटे और शाबाशी देते हुए बोले, बहुत अच्छा बेटे। तुम कर लोगे। बस इसी तरह प्रयास करते रहो। राहुल बोला, दादा जी, मुझसे कुछ नहीं होता। सब मुझसे बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जबकि मैं हमेशा हार जाता हूं।

दादा जी बोले, मैं तुम्हें एक सलाह दूं, तुम मानोगे? राहुल बोला, आप जो भी कहेंगे, वह मैं मानूंगा। आप ही तो मेरे पथ प्रदर्शक हैं। दादा जी बोले, तुम अगले तीन दिन तक यहां मेरी ही देखरेख में प्रैक्टिस करो। तुम्हें फर्क नजर आ जाएगा। राहुल को खेलना तो अच्छा लगता ही था। अगले तीन दिन तक वह वहीं दादा जी के साथ पत्थरों से प्रैक्टिस करता रहा।

रविवार के मैच से पहले तक राहुल में इतना आत्मविश्वास आ चुका था कि उसने अपने कप्तान से गेंदबाजी करने के बारे में कह दिया। मैच के दिन राहुल की टीम ने पहले खेलते हुए डेढ़ सौ रन बनाए। पर विपक्षी टीम की शानदार बल्लेबाजी से वे संकट में फंस रहे थे। तभी छठे ओवर में राहुल को गेंद दी गई, तो उसने तीन विकेट लेकर फर्क पैदा कर दिया। जीत के बाद साथी खिलाड़ी राहुल को बधाई देने आए, तो उसने कहा कि इसके हकदार तो मेरे दादा जी हैं।

धैर्य और आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है।